करवा चौथ की कहानी

करवा चौथ की कहानी
बहुत समय पहले की बात है, एक साहूकार केसात बेटे और एक प्यारी
बहन थी। इन सातों भाइयों ने अपनी बहन को बहुत प्यार से रखा और
हमेशा यह सुनिश्चित किया कि वे खुद खाना खाने से पहले उनकी
वे खुद खाना खाने से पहले उनकी
बहन खाना खाए। धीरे - धीरे समय बीतता गया और उनकी बहन की
शादी हो गयी, एक दिन जब उनकी बहन ससुराल से मायकेआई. भाइयों न जब उनकी बहन ससुराल से मायकेआई. भाइयों
ने दिन का अपना कारोबार ख़त्म कर शाम कोन का अपना कारोबार ख़त्म कर शाम को घर आये तो उन्हें अपनी
बहन कुछ परेशान दिखी। फिर वे सभी रात को खाना खाने केलिए
ए
इकट्ठे हुए, भाइयों ने अपनी बहन से खाने का आग्रह कियाया, लेकिन न
उसने बताया कि वह करवा चौथ का निर्जला व्रत रख रही है और केवल
जला व्रत रख रही है और केवल
चंद्रमा को देखने और उसे अर्घ्य देने केबाद ही अपना व्रत तोड़ सकती देने केबाद ही अपना व्रत तोड़ सकती
है। अभी चंद्रमा नहीं निकला हैकला है, इसलिए वह भूखीए वह भूखी-प्यासी थी।
यह सुनकर सबसे छोटे भाई ने अपनी बहन की दुर्दशा देखकर एक शा देखकर एक
दीपक लिया और उसे कुछ दूरी पर एक पीपल केपेड़ केनीचे चलनी या और उसे कुछ दूरी पर एक पीपल केपेड़ केनीचे चलनी
की ओट में रख दिया। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था मानो या। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था मानो
चतुर्थी का चंद्रमा उदित हो रहा होत हो रहा हो, फिर उसने अपनी बहन को बताया ि उसने अपनी बहन को बताया
की चंद्रमा दिखाई दे रहा हैखाई दे रहा है, जिसे देखकर तुम अपना उपवास तोड़ सकती सकती
हो। बहन बहुत खुश होकर, घर की सीढ़ियों पर चढ़ गई और फिर चंद्रमा
ि चंद्रमा
को अर्घ्य देकर अपना भोजन शुरू किया।
या।
जैसे ही उसने अपना पहला निवाला खायावाला खाया, उसे छींक आ गईंक आ गई; दूसरे
निवाला खाने पर उसे एक बाल मिला और फिर तीसरा निवाला खाने वाला खाने
ही वाली थी की उसे अपने पति केनिधन की खबर मिली
ली, जिससे वह ससे वह
गहरे सदमे में आकर टूट गई।

उसकी भाभी ने इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना केपीछे की सच्चाई का खुलासा
घटना केपीछे की सच्चाई का खुलासा
करते हुए बताया कि तुम्हारे द्वारा करवा चौथ का व्रत अनुचित तरीके
त तरीके
से तोड़ने से देवता नाराज हो गए थे। सच्चाई जानने केबाद करवा ने
प्रतिज्ञा की कि वह अपने पति का दाह संस्कार नहीं होने देगी जब तक
का दाह संस्कार नहीं होने देगी जब तक
की उसका पति पुनर्जीवित न हो जाये
त न हो जाये, वह पूरे एक वर्ष तक अपने पति

केसाथ रही, उसकी देखभाल की और उसकेशरीर पर उगने वाली सुई
जैसे घास को इकट्ठा किया।या।
एक साल बाद, करवा चौथ फिर आया और उसकी सभी भाभियों ने व्रत
यों ने व्रत
रखा। जैसे ही उसकेभाभियाँ आशीर्वाद लेने उसकेपास आती है
द लेने उसकेपास आती है, उसने
प्रत्येक भाभियो से एक सुई देकर अपने पति को पुनर्जीवित कर देने
त कर देने
और मुझे वापस सुहागन बना दो ऐसा अनुरोध करती, उसकी भाभियों
यों
ने अगले आने वाली भाभियो से ऐसा कहने को कहा
यो से ऐसा कहने को कहा, अंततः जब छठी
भाभी आई और करवा ने वही बात उनकेसामने दोहराई तो छठी भाभी भाभी
ने बताया कि तुम्हारा यह काम तुम्हारी सबसे छोटे भाई की पत्नी ही तुम्हारा यह काम तुम्हारी सबसे छोटे भाई की पत्नी ही
कर सकती है, उसी केपास तुम्हारे पति को वापस जीवित करने की
त करने की
शक्ति है है, क्योंकि तुम्हारे सबसे छोटे द्वारा किये गए कार्य केकारण
आपका व्रत टूट गया था। भाभी ने करवा को निर्देश दिया कि वह उसे
वह उसे
कसकर पकड़ ले और जब तक उसका पति पुनर्जीवित न हो जाए
त न हो जाए, उसे
न छोड़े और फिर वह वह से चली गई।िर वह वह से चली गई।
अंत में जब सबसे छोटी भाभी आई तो करवा ने उससे भी यही निवेदन वेदन
किया। यह देखकर भाभी झिझकने लगी और यह देखकर करवा ने उसे
झकने लगी और यह देखकर करवा ने उसे
जोर से पकड़ लिया और जिद करने लगी कि वह उसकेपति को
को
पुनर्जीवित कर दे। करवा की पकड़ इतनी मजबूत थी की लाख कोशिसो
सो
केबाद भी भाभी उसकेपकड़ से छूट नहीं से छूट नहीं पायी, अंततः वह निराश हो राश हो

गई और उसने अपनी छोटी उंगली काट दी और उसमें से अमृत
निकालकर अपने पति केमुँह में डाल दिया
या, उसकेतुरंत बाद करवा का
पति श्री गणेशेश-श्री गणेश का जाप करता हुआ जाग गया। भगवान की ेश का जाप करता हुआ जाग गया। भगवान की
कृपा से, अपनी सबसे छोटी भाभी केहस्तक्षेप केकारण करवा को अपने
करवा को अपने
पति से फिर से मिल जाते है. ल जाते है.